School of मानविकी विद्याशाखा

Certificate

I hereby declare that the short synopsis Research Topic "भारतीयता की अवधारणा के निर्माण में तुलसीदास का अवदान एक अनुशीलन" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Subject हिन्दी under school of मानविकी विद्याशाखा of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2023-24.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. सत्यपाल तिवारी and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

(Signature)
Name of Candidate- अजीत गुप्ता
En. No.- 2301301

Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)
(Signature)
(Name) प्रो0 सत्यपाल तिवारी
Faculty of (Subject ---)

(Signature)
(Name) प्रो0 सत्यपाल तिवारी

(Director of Concerned School of Studies)

02/06/25

(Signature)
(Name)
(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)

(Approved Research Topic)

"भारतीयता की अवधारणा के निर्माण में तुलसीदास का अवदान : एक अनुशीलन"

"BHARATIYATA KI AVADHARANA KE NIRMAN ME TULSIDAS KA AVADAN EK ANUSHILAN"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI
to
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

Submitted by
प्रस्तुतकर्ता

Name of Guide-
Prof. Satyapal Tiwari
शोध निर्देशक का नाम–
प्रो0 सत्यपाल तिवारी

Name of Candidate-Ajit Gupta
शोधकर्ता का नाम– अजीत गुप्ता
Enrollment No.- 2301301
नामांकन सं0–2301301
Subject- Hindi
विषय–हिन्दी

Faculty of (Hindi)
मानविकी विद्याशाखा
School of Humanity
U.P. Rajarshi Tandon Open University
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डनमुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
Shantipuram, (Sector -F) Phaphamau, Prayagraj - 211021

सार (Abstract)

''भारतीयता की अवधारणा के निर्माण में तुलसीदास का अवदान : एक अनुशीलन'' विषय पर प्रस्तुत यह शोध–कार्य भारतीय सांस्कृतिक चेतना, नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक दृष्टिकोण एवं सामाजिक समरसता के निर्माण में गोस्वामी तुलसीदास के साहित्यिक योगदान का विश्लेषण करता है। तुलसीदास कृत रामचरितमानस, विनय पत्रिका, दोहावली, कवितावली आदि ग्रंथों के माध्यम से न केवल धार्मिक भावनाओं को जाग्रत किया गया, बल्कि भारतीय समाज की आत्मा को एक सूत्र में पिरोने का कार्य भी किया गया। इस शोध में यह विवेचना की गई है कि किस प्रकार तुलसी साहित्य ने भक्ति के माध्यम से सामाजिक समरसता, धर्म के प्रति आस्था, लोककल्याण, मर्यादा पुरुषोत्तम की आदर्श छवि, एवं राष्ट्रभावना को पोषित किया। तुलसीदास की भाषा शैली, अवधी लोकभाषा में रचित उनकी रचनाएं जनमानस के निकट हैं और उन्होंने भारत की सांस्कृतिक एकता को गहराई से प्रभावित किया है। यह शोध यह भी स्पष्ट करता है कि तुलसी साहित्य केवल धार्मिक ग्रंथ न होकर भारतीयता के स्थायी मूल्यों जैसे कर्तव्य, शील, त्याग, सहिष्णुता एवं नारी सम्मान के वाहक हैं। तुलसीदास का काव्य भारतीय जीवन–दर्शन का प्रतिबिम्ब है, जिसने अनेक पीढ़ियों को सांस्कृतिक, नैतिक व आध्यात्मिक दिशा प्रदान की है। इस प्रकार, यह शोध भारतीयता की अवधारणा को समझने के लिए तुलसी साहित्य की महत्ता को उजागर करता है।

Keyword :- भारतीयता, तुलसी, भारतीय सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिक दृष्टिकोण, सामाजिक समरसता, भारतीयता के स्थाई मूल्य।

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1	Introduction	1-2
2	Literature Review	2-7
3	Description Broad Area	7-8
4	Objectives of the Study	8-8
5	Research Methodology	8-11
6	Expected Outcome of the Research	11
	References	
	Plagiarism Report	

प्रस्तावना–

भारत दो शब्दों से मिलकर बना है– 'भा' और 'रत' जहाँ भा का अर्थ 'ज्ञान रूपी प्रकाश' तथा रत का अर्थ 'संलग्न' या लगा हुआ अर्थात् वह भूमि जिसके निवासी ज्ञान की खोज में अनवरत् लगे हुए हैं। भारत शब्द से ही निर्मित शब्द भारतीयता है जिसका अभिप्राय हमारे देश से संदर्भित अनुभूत तत्व और सत्य जिसमें भारत की सामूहिक चेतना प्राप्त होती है। भारतीयता शब्द में भारत मात्र एक भूखंड नहीं है इसके पीछे सांस्कृतिक पहचान, प्रकृति प्रेम, सौंदर्य चेतना है। साथ ही साथ राष्ट्र का आधार धर्म है लेकिन धर्म का अर्थ मजहब नहीं आचरण पद्धति या जीवन मूल्यों के प्रति जागरुकता से है। प्रसिद्ध धर्मशास्त्रीय ग्रंथ 'मनुस्मृति' में धर्म को व्याख्यायित करते हुए लिखा गया है कि–

"धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणं।"

भारत में विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय, रीति–रिवाज अनेक संस्कृतियां, विभिन्न जाति समूह निवास करते हैं। लेकिन बहुलता होने पर भी भारतीय एकता अखंड रूप से विद्यमान है। यही स्वरूप भारतीयता का निर्माण करता है। सामाजिक और सांस्कृतिक अनेकता होने पर भी हमारी अवधारणा 'वसुधैव कुटुंबकम्' तथा 'सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया' जैसे विश्व कल्याणकारी एवं लोकमंगलकारी विचारों से परिपूर्ण रही जो सनातन धर्म का मूल संस्कार एवं मुख्य बोध रहा है। अपनी आत्मा में विश्व कल्याण की भावना रखने के कारण प्राचीन काल से हम भारतवासी विश्व के प्राण और सिरमौर रहे हैं। इन्हीं भावनाओं के कारण भारत को विश्वगुरू कहा गया। मध्यकाल भारतीय संस्कृति और सभ्यता के पतन का काल रहा इसीलिए मुगलिया शासन को तुलसी म्लेच्छों का शासन कहते थे। तुलसीदास का

मानना था कि अकबर की गलत नीतियों जैसे– कर व्यवस्था और भ्रष्ट शासन व्यवस्था के कारण देश में बार–बार अकाल पड़ रहे हैं। शासन और सामंतों के कुकृत्यों का फल अकाल के रूप में आमजन को भोगना पड़ रहा है। तुलसी अपने समय की दुर्दशा का वर्णन करते हुए लिखते हैं–

"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,

बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।

जीविका बिहीन सीद्यमान सोच बस,

कहैं एकएकन सौं 'कहाँ जाई का करी।।

दारिद–दसानन दबाई दुनी दीनबन्धु,

दुरित–दहन देखि तुलसी हहा करी।।"

मुगलिया शासन के विपरीत गोस्वामी तुलसीदास राज्य एवं राजा के कर्त्तव्यों का निर्धारण लोक कल्याण के रूप में देखते हैं, जिसे तुलसीदास 'रामराज्य' के रूप में स्थापित करते हैं। लोक कल्याण की यह भावना हमारे सनातन संस्कृति से निकलकर चाणक्य के **'प्रजा सुखे सुखम् राज्ञः, प्रजानाम् च हितेहितम'** से होकर तुलसी के **'जासुराज प्रिय प्रजा दुखारी, सोई नृप अवसि नरक अधिकारी'** में प्रबल रूप से दिखायी देता है। तुलसी के लोक कल्याणकारी राज्य का स्पष्ट प्रभाव भारत सरकार की नीतियों **'सबका साथ, सबका विकास'** में दिखाई देता है।

भाषा और संस्कृति के बारे में तुलसी का विचार महत्वपूर्ण रहा है जो सर्वदा प्रासंगिक रहेगा। तत्कालीन लोक भाषा ब्रज एवं अवधी में रचनाएं बहुल मात्रा में हुई लेकिन विद्वानों का मत था कि देव भाषा संस्कृत ही विद्वानों की भाषा है। गोस्वामी तुलसीदास का भाषा के प्रति नजरिया

समन्वयवादी रहा उनका मानना है कि भाषा में प्रेम होना चाहिए वे कहते भी हैं कि **'का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिए साँच।'**

साहित्य समीक्षा–

विषय–भारतीयता की अवधारणा के निर्माण में तुलसीदास का अवदान एक अनुशीलन

1. भूमिका

भारतीयता एक जटिल एवं बहुआयामी अवधारणा है, जिसमें राष्ट्रबोध, सांस्कृतिक मूल्यों, भाषिक एकता, धर्म–निष्ठा, सामाजिक समरसता एवं आध्यात्मिक चिंतन का समावेश होता है। भारतीयता की यह अवधारणा केवल राजनीतिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, अपितु यह भारत के जनमानस की सामूहिक चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। इस चेतना के निर्माण में गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। तुलसी साहित्य ने न केवल धार्मिक पुनर्जागरण में भूमिका निभाई, बल्कि भारतीयता के नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को जन–जन तक पहुँचाया।

2. पूर्ववर्ती साहित्य का अवलोकन

1. रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं कि तुलसी का समस्त काव्य लोकमंगल की अवधारणा के लिए रचित है। गोस्वामी तुलसीदास ने समकालीन पीड़ित तथा दुखी जनता के हृदय में धर्म के इस लोकमंगल स्वरूप को सामने लाकर लोगों के मन में आशा का संचार किया। शुक्ल जी के अनुसार तुलसीदास ने धर्म को केवल साधना का विषय नहीं बल्कि लोग मंगल का माध्यम बनाया। शुक्ल जी कहते हैं कि तुलसीदास भारतीय संस्कृति के

प्रमुख पक्ष ज्ञान और भक्ति में तुलसीदास भक्ति को महत्व देते हैं। तुलसी की भक्ति 'लखै कोई बीरले' ना होकर सीधा–साधा तथा स्वाभाविक मार्ग है। तुलसी के भक्ति के इस स्वरूप के कारण ही शुक्ल जी मानते हैं कि–''अपने दृष्टि विस्तार के कारण है तुलसीदास जी उत्तरी भारत के समग्र जनता के हृदय मंदिर में पूर्ण प्रेम प्रतिष्ठा के साथ विराज रहे हो।''

2. हजारी प्रसाद द्विवेदी 'हिंदी साहित्य की भूमिका' में तुलसी को भारतीय जीवन दर्शन का लोक प्रवक्ता माना है। वे आगे लिखते हैं कि तुलसी ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति में प्राण डालने का कार्य किया; विशेष रूप से रामचरितमानस रचना द्वारा। द्विवेदी जी तुलसी के इसी गुण के कारण उन्हें लोकनायक की संज्ञा देते हैं – ''भारतवर्ष का लोक नायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके। क्योंकि भारतीय समाज में नाना प्रकार की परस्पर विरोधी संस्कृतियां, साधनाएं, अचारनिष्ठा और विचार पद्धतियां प्रचलित हैं। बुद्धदेव समन्वयकारी थे, गीता में समन्वय की चेष्टा है और तुलसी भी समन्वयकारी है। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।''

3. आचार्य विश्वनाथ त्रिपाठी अपनी पुस्तक 'लोकवादी तुलसी' में तुलसी को महान देश प्रेमी और लोक चेतना का कवि कहा है पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं कि– ''तुलसी की लोकप्रियता का आधार धर्मभीरुता नहीं है। देश में कोई मंदिर न जाए, कीर्तन न करे तब भी उनकी कविता लोकप्रिय रहेगी, क्योंकि उनकी कविता जिंदगी के सन्दर्भवान् है।''

4. रामविलास शर्मा के अनुसार भक्ति के लिए सभी वर्ग जातियों को

अपने साहित्य में स्थान देते हुए, पुरोहितों के एकाधिकार को तुलसी तोड़ते हैं। यह उनका प्रगतिशील दृष्टिकोण है। सामंती व्यवस्था में पुरुषों के धर्म और स्त्रियों के धर्म में अंतर है लेकिन तुलसी के राम राज्य में दोनों के लिए एक ही धर्म है परंपरा और मूल्यांकन पुस्तक में लिखते हैं कि–"भक्त तुलसीदास मूलतः मानववादी हैं और मानववाद स्वभावतः ही एक सामंत विरोधी मूल्य है।"

3. तुलसी साहित्य में भारतीयता के तत्त्व

(क) सांस्कृतिक एकता

ने रामचरितमानस में राम को केवल एक धार्मिक नायक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। "रघुकुल रीति सदा चली आई" जैसे पद भारतीय परंपरा में मर्यादा और आदर्श की शाश्वतता को रेखांकित करते हैं।

(ख) भाषिक एकता और जनभाषा का प्रयोग

तुलसी ने अवधी जैसी लोकभाषा में रचनाएं कर भारतीयता की भाषा–समरसता को सशक्त किया। रामचरितमानस जैसे ग्रंथ को जनमानस में लोकप्रिय बनाकर उन्होंने भाषाई विविधता में एकता का संदेश दिया।

(ग) धार्मिक सहिष्णुता एवं समरसता

तुलसी साहित्य में धर्म का मूल आधार सहिष्णुता एवं समभाव है। रामचरितमानस में षसिया राममय सब जग जानीष पंक्ति सम्पूर्ण जगत में एकता की भावना का परिचायक है।

(घ) नारी सम्मान और पारिवारिक मूल्य

तुलसीदास ने स्त्रियों की गरिमा और मर्यादा को प्रतिष्ठित किया।

सीता के चरित्र में पवित्रता, धैर्य, त्याग और आत्मबल के गुण भारतीय नारी की छवि के रूप में स्थापित हुए।

4. सामाजिक–पुनर्निर्माण

भक्ति आंदोलन के अंतर्गत तुलसीदास ने भारतीय समाज को जातिगत विघटन, राजनीतिक अस्थिरता और नैतिक पतन से उबारने का कार्य किया। उनका साहित्य लोकभाषा, लोकमंगल और लोकआस्था का संगम है। उन्होंने वर्णाश्रम धर्म की मर्यादा में रहते हुए सामाजिक समरसता का प्रचार कियाः–

"बंदउँ संत असज्जन चरना,
हृदयँ सरसिज जानि निअरना।"

5. आधुनिक दृष्टिकोण और तुलसी साहित्य

वर्तमान समय में जब वैश्वीकरण के प्रभाव से भारतीय मूल्य संकट में हैं, तुलसी साहित्य एक नैतिक व सांस्कृतिक संबल के रूप में उभरता है। प्रो. नगेन्द्र के अनुसार, "तुलसी साहित्य भारतीय मानस की स्मृति है, जिसमें समय से परे जाकर भी भारत का आत्मबोध जीवित रहता है।"

तुलसी साहित्य पर समकालीन शोध की दिशा बहुआयामी हो गयी है।

- लोक परंपरा में तुलसी
- साहित्य में चित्रित निर्माण का अध्ययन
- नारी विमर्श
- पर्यावरणीय दृष्टिकोण
- सांस्कृतिक अध्ययन
- जनकवि के रूप में

विभिन्न विश्वविद्यालयों में तुलसी साहित्य पर हो रहे शोध यह सिद्ध करते हैं कि तुलसीदास की रचनाएँ आज भी भारतीयता के विमर्श में प्रासंगिक हैं। तुलसी साहित्य केवल धार्मिक आख्यान नहीं, अपितु भारतीयता के सांस्कृतिक, भाषिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक ताने–बाने का शिल्पकार है। तुलसीदास ने भारतीय समाज की आत्मा को समझते हुए एक ऐसी विचारधारा प्रस्तुत की, जो युगों तक प्रासंगिक रही और आज भी भारतीयता के मूल्यों को पोषित कर रही है। साहित्यिक दृष्टि से उनका योगदान केवल भाषा या शैली तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय आत्मा की अभिव्यक्ति के रूप में अमूल्य है।

व्यापक क्षेत्र का विवरण–

आधुनिक भूमण्डलीकरण के समय में नैतिक मूल्यों के पतन के कारण समाज एवं परिवार व्यवस्था का संकट, वृद्धों की समस्या, गुरु शिष्य परम्परा का क्षरण तथा राज्यों के गैर जिम्मेदाराना रवैया प्रमुख संकटों के रूप में सामने आये हैं। अतः यह अपेक्षित है कि अतीत में जाकर पुरातन मूल्यों की स्थापना और इसके आधार पर नये विकल्पों की तलाश की जाये।

शोध का उद्देश्य–

पश्चिमी देशों की मानसिकता प्रायः भारतीय संस्कृति को हीनतर दिखाने की रही है तथा इन सभी का मानना है कि भारत सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप से समृद्ध नहीं है, उदाहरण स्वरूप मैकाले का मानना था कि भारतीय संस्कृति एवं साहित्य की क्षमता यूरोप के किसी एक पुस्तकालय की एक आलमारी के बारावर नहीं है। ज्ञातव्य है कि मुस्लिम शासन के प्रभाव स्वरूप भारत में सामाजिक रूप से नैतिक पतन की कुछ घटनाएँ परिलक्षित हुई। जिसे भारतीय बुद्धिजीवियों ने अपने साहित्य में अनुरेखित किया, तुलसीदास इसके अप्रतिम उदाहरण हैं। प्रायः मुसिलम एवं यूरोपीय विद्वान

दोनों ही इस बात पर सहमत हैं कि भारत में राज्य की कोई संकल्पना नहीं थी तथा राजनीति की कोई उत्तम व्यवस्था नहीं थी। उदाहरण के लिए मार्क्स ने एशियाई शासन को 'निरंकुशवादी शासन' की संज्ञा दी है। साथ ही साथ पश्चिमी तथा वामपंथी विद्वानों का मत है कि लोक कल्याण की अवधारणा मुगल शासक अकबर और औपनिवेशिक शासन की देन है, जो सही नहीं है। इस शोध के माध्यम से भारतीय संस्कृति के लोक कल्याणकारी विचारों को दर्शाना तथा यह स्थापित करना है कि भारत में सुदृढ़ शासन व्यवस्था की आधारशिला थी तथा राज्य द्वारा लोक कल्याणकारी कार्य की व्यापक संकल्पना थी जिसे तुलसी ने अपने ग्रंथों में 'रामराज्य' कहा है। शोध के माध्यम से यह बताना कि भारत सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप से प्राचीन काल से समृद्ध रहा तथा लोकमंगल की व्यापक संकल्पना विद्यमान रही। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा इस संकल्पना को व्यापक रूप प्रदान किया गया।

उपयुक्त शोध पद्धतियाँ

शोध विषय ''भारतीयता की अवधारणा के निर्माण में तुलसीदास का अवदान : एक अनुशीलन'' के अध्ययन हेतु निम्नलिखित प्रमुख शोध पद्धतियाँ अपनाई जा सकती हैं। चूंकि यह एक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन है, अतः इसमें गुणात्मक दृष्टिकोण प्रमुख होगा।

1. ऐतिहासिक पद्धति

इस पद्धति के अंतर्गत तुलसी साहित्य को उस ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में देखा जाएगा, जिसमें यह रचा गया था।

तुलसीदास के युग (भक्ति काल, मुगल शासन, सामाजिक विघटन) की परिस्थितियों का विश्लेषण किया जाएगा।

2. साहित्यिक आलोचनात्मक पद्धति

तुलसी साहित्य की रचनाओं जैसे रामचरितमानस, विनय पत्रिका, कवितावली आदि की पाठ–समीक्षा कर उनके भाव, शैली, प्रतीकों और दृष्टिकोणों का विश्लेषण किया जाएगा।

तुलसी के साहित्य में भारतीयता के तत्त्वों की पहचान की जाएगी।

3. विषयात्मक विश्लेषण पद्धति

तुलसी साहित्य में उपस्थित भारतीयता के प्रमुख विषयों (जैसे मर्यादा, धर्म, नारी सम्मान, लोकमंगल, सहिष्णुता) की पहचान और गहन अध्ययन।

यह विश्लेषण तुलसी के पात्रों, घटनाओं और संवादों के माध्यम से किया जाएगा।

4. तुलनात्मक पद्धति

तुलसीदास के विचारों की तुलना अन्य समकालीन भक्त कवियों (जैसे कबीर, सूरदास, मीराबाई) या अन्य धार्मिक ग्रंथों से की जा सकती है ताकि तुलसी की विशिष्टता स्पष्ट हो सके।

आधुनिक भारतीयता की अवधारणा से तुलसी की भारतीयता की तुलना भी की जा सकती है।

5. सांस्कृतिक–सामाजिक पद्धति

तुलसी साहित्य को सामाजिक दृष्टिकोण से विश्लेषित करना, जैसे कि जाति व्यवस्था, सामाजिक समरसता, स्त्री की स्थिति, पारिवारिक मूल्य आदि।

यह पद्धति यह समझने में सहायक होती है कि तुलसी साहित्य ने जनमानस पर क्या प्रभाव डाला।

6. संदर्भ आधारित पद्धति

रचनाओं की व्याख्या उनके ऐतिहासिक, सामाजिक और धार्मिक संदर्भों में की जाती है। यह तुलसी की अभिव्यक्ति और उनके विचारों को उनके युगानुकूल दृष्टि से समझने में सहायक है।

शोध के अपेक्षित निष्कर्ष–

समकालीन समय में भारतीयता की अवधारणा के संदर्भ का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है। कतिपय भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा भारतीयता को गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया। इन विद्वानों का भारतीयता राजा मुस्लिम शासन तथा औपनिवेशिक शासन के प्रति सम्मान के सम्मान एवं भारतीय संस्कृति के प्रति दुराग्रहों का परिणाम है। इसीलिए प्राचीन काल से लेकर अब तक के भारतीयता को समझने के लिए तुलसी के काव्य में विद्यमान भारतीयता के चिंतन को समझना होगा। जिसके फलस्वरूप प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रति दुराग्रहों को दूर कर गौरव का भाव भारतीयों के मन में जाग्रत हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

आधार ग्रंथ–

1. रामचरित मानस, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर।
2. कवितावली, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर।
3. विनय पत्रिका, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर।
4. दोहावली, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर।
5. गीतावली, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर।

6. कृष्ण गीतावली, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर।

7. रामलला नहछू, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर।

8. वैराग्य संदीपनी, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर।

9. बरवै रामायण, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर।

10. पार्वती मंगल, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर।

11. जानकी मंगल, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर।

12. रामाज्ञा प्रश्न, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर।

सहायक ग्रंथ–

1. श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, गीता प्रेस गोरखपुर।
2. श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस गोरखपुर।
3. पं0 रामनारायण दत्त शास्त्री, अनुवादक–शान्तिपर्व (महाभारत), गीता प्रेस गोरखपुर।
4. रामचन्द्र वर्मा शास्त्री, टीकाकार (मनुस्मृति), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास,नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
6. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
7. रामविलास शर्मा, परम्परा का मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकवादी तुलसी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
9. डॉ0 मैनेजर पाण्डेय, भक्ति आंदोलन और भारतीयता, जनवाणी प्रकाशन।
10. विद्या निवास मिश्रा, भारतीयता की पहचान, वाणी प्रकाशन प्रयागराज।
11. कौटिल्य, अर्थाशास्त्र, अनुवादक– प्राणनाथ विद्यालंकार, प्रकाशन मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
12. ए0एल0 बॉशम, अद्भुत भारत, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा।

13. रामचन्द्र शुक्ल, चिंतामणि, अद्वैत प्रकाशन, नई दिल्ली।

14. रामविलास शर्मा, भारतीय सौंदर्य बोध और तुलसीदास, साहित्य अकादमी, दिल्ली।

15. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

16. अमृतलाल नागर, मानस का हंस, राजपाल प्रकाशन नई दिल्ली।

17. के0 दामोदरन, भारतीय चिंतन परम्परा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड, नई दिल्ली।

18. राममनोहर लोहिया, भारतमाता धरतीमाता, लोक भारती पेपर वैक्स प्रयागराज।

19. राष्ट्रधर्म पत्रिका, स्वत्वाधिकारी राष्ट्रधर्म प्रकाशन, लखनऊ।

20. भारतीय जनता पार्टी, ई—लाईब्रेरी।

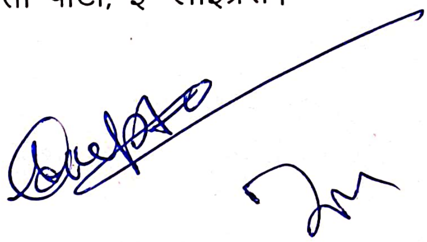

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language	Hindi

Submission Information

Author Name	Ajit Gupta
Title	Bharteeyata ki avdharana ke nirman.....
Paper/Submission ID	4091485
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-07-14 13:57:55
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**0%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

...it Similarity Report

0	0	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

...ATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE